# क्या नहीं करें

X हैचरी को लगातार एक ही स्थान पर मत बनाएं। इससे अंडों में फफूंद और कीटाणु लगने का खतरा कम हो जाता है।

X स्थानांतरण के समय अंडे सूखी रेत के संपर्क में नही आने चाहियें।

X हैचरी को ऊपर से मत ढकें और उसे पेड़ों की छाया से दूर बनाएं। ज़रूरत पड़े तो घोसलों को मछली पकड़ने की जाली से ढका जा सकता है जिससे घोसलों में उचित तापमान बना रहे।

X घोसलों को अंडे सेके जाने के शुरुवाती दौर मे उसे छाया मे मत रखें, ना ही उन पर पानी छिड़कें। इससे कछुओं के लिंग अनुपात बिगड़ने का खतरा रहता है। अंडों से बच्चे निकलने के कुछ समय पहले अत्यधिक गर्मी के प्रभाव को रोकने के लिए घोसलों को ढका जा सकता है या उन पर पानी छिड़का जा सकता है।

X नवजात कछुओं को कभी पानी से भरी बाल्टी मे अथवा किसी अन्य बर्तन में मत रखें। इस समय वह ऐसी अवस्था (जुवेनाइल स्विमिंग फ्रेंज़ी) मे होते हैं, जिसमे वे खुद से चल कर समुद्र की तरफ जाने, और फिर उसमे तैर कर किनारे से दूर जाने की तैयारी मे रहते हैं। अगर इस प्रक्रिया मे छेड़-छाड़ की जाए तो उन्हें नुकसान हो सकता है।

X सारे नवजात कछुओं को हर दिन एक ही स्थान से मत छोड़ें। इससे समुद्र मे शिकारी मछलियाँ वहाँ पर जमा हो जायेंगी। उनको छोड़ने के स्थानों में कई मीटर की दूरी होनी चाहिये।

# उचित तरीके

# समुद्री कछुओं की हैचरी

समुद्री कछुओं के घोसलों को संरक्षण, शोध (रिसर्च) और आउटरीच के लिए स्थानांतरित किया जा सकता है। संरक्षण की दृष्टि से, घोसले को हैचरी (कृत्रिम तरीके से अंडे देने वाली जगह) मे तभी ले जाएँ जब यह बहुत ज़रूरी हो, जैसे जब घोसले को शिकारी जानवरों से, ज्वार (बड़ा पानी) के पानी से, और ऐसे अन्य कारणों से खतरा हो।

# क्या करें

- यह सुनिश्चित कर लें कि आपके पास अंडे सम्हालने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए ज़रूरी अनुमति हों।

- हैचरी ज्वार (बड़ा पानी) की सीमा से लगभग 20-30 मीटर की दूरी पर हो। इससे घोसले मे पानी भरने की वजह से होने वाले नुकसान का खतरा कम रहता है। हैचरी प्राकृतिक अंडे देने के क्षेत्र के निकट होनी चाहिए।

- हैचरी प्राकृतिक अंडे देने की जगह के पास रखने का कारण यह है कि अंडे इकठ्ठा करने और उन्हें हैचरी तक ले जाने मे कम से कम समय लगे।

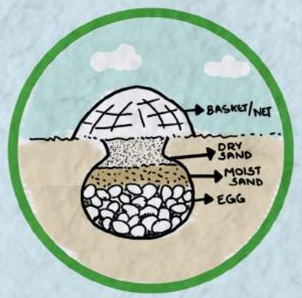


- हैचरी मे घोसले का आकार प्राकृतिक घोसलों के जैसा होना चाहिए - ऊपर से सकरा और नीचे चौड़ा- घड़े के समान। अंडों को पहले गीली रेत से, फिर बाद मे ऊपर से सूखी रेत से ढकना चाहिए।

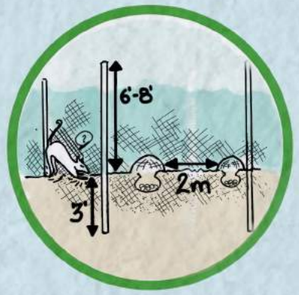


- हैचरी की दीवारें प्लास्टिक अथवा धातु की जाली से बनी होनी चाहियें। उनकी ऊचाई 6-8 फुट होनी चाहिए और वो ज़मीन मे 3 फुट अंदर तक गड़ी होनी चाहिए, जिससे कुत्ते, लोमड़ी, घुई (गोह) जैसे शिकारी जानवरों को दूर रखा जा सके।

- दीवार के निचले हिस्से मे छोटे छेद वाली जाली का प्रयोग करना चाहिए जिससे नवजात कछुए बाहर नहीं निकल सकें।

- दो घोसलों के बीच में कम से कम 1-2 मीटर तक की दूरी होनी चाहिए। इससे अंडों से बच्चे निकलने की संभावना बढ़ जाती है।

- नवजात कछुओं को उनके अंडों से निकलने के बाद जितना हो सके उतनी जल्दी समुद्र मे छोड़ें। उनको सूर्योदय से पहले अथवा सूर्यास्त के बाद ही छोड़ें।

- अंडों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते समय बहुत सावधानी से, बिना हिलाये ले जाएँ।

- घोसलों से बच्चे निकलने का समय निकट आने पर हर घोसले को टोकरी/जाली से ढक कर रखें। ताकि नवजात कछुए शिकारी जानवरों से और धूप से बच सकें।

- आप जिस जगह हैचरी बनाना चाहते हैं वहाँ कोई पेड़-पौधे अथवा जड़ें नही होनी चाहियें और वहाँ की रेत का आकार प्रकार प्राकृतिक अंडे देने वाले क्षेत्रों की रेत के समान होना चाहिए। हैचरी की दीवारें दिए गए निर्देशों के हिसाब से ही बनाएं।

- घोसले की सारी जानकारी (डेटा) को ध्यान पूर्वक किसी पुस्तक मे मॉनिटरिंग और शोध के लिए लिख लें। घोसले के ऊपर एक प्लास्टिक, गत्ते अथवा अन्य उचित सामान से बना एक बोर्ड लगा लें, जिसमे घोसले के बारे मे बुनियादी जानकारी जैसे अंडों की संख्या, अंडे देने की तारीख, इत्यादि लिखी हुई हो।